

भगत भीखन - सबद २
ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदार्थु पाइआ ॥
रागु सोरठि, भगत भीखन, गुरु ग्रंथ साहिब, ६५९

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदार्थु पाइआ ॥
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥१॥
हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ जैसे गूंगे की मिठिआई ॥१॥
रहाउ ॥ रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥२॥२॥

सार: सर्वव्यापक जागरूकता की खूबियाँ भाषा की सीमाओं से कहीं अधिक आगे तक फैली हैं। इनका संबंध केवल शब्दों के सतहीपन के बजाय हमारे वास्तविक जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों से है। यह व्यापक जागरूकता बदलाव लाने में मदद करती है और बिखरे हुए मन को सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत अवस्था की ओर ले जाती है। यह अहंकार के कारण बनी बचाव की कठोर दीवारों को धीरे-धीरे नरम करती है और साथ ही दूसरों के प्रति सहानुभूति की व्यापक क्षमता को भी बढ़ाती है। इस समृद्ध अवस्था में, हम एकता को केवल अस्पष्ट विचार के रूप में नहीं बल्कि जीवंत सच्चाई के रूप में देखते हैं जिसे हम अपने अस्तित्व की गहराई में महसूस करते हैं। जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है, वह हमारी मौजूदगी, हमारे भीतर बने संतुलन और हमारे व्यवहार में आए गहरे परिवर्तन के माध्यम से सामने आती है।

ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदार्थु पाइआ ॥
नेक समझ और चिंतन से ऐसा अनमोल और मूल्यवान रत्न मिला है जो गहन जागरूकता का प्रतीक है। यह अंदरूनी सफ़र भ्रम से दूर ले जाता है और ऐसे बदलाव लाने वाले अनुभवों के दरवाज़े खोलता है जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥ १ ॥

मन में छिपाकर रखने की तमाम कोशिशों के बावजूद, यह अंदरूनी रत्न छिप नहीं सकता। इसका अर्थ है कि विनम्र व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति का प्रदर्शन नहीं करता, फिर भी, यह बदलाव किसी व्यक्ति की मौजूदगी, व्यवहार या ज़िंदगी के प्रति नज़रिए से साफ़ ज़ाहिर हो ही जाता है। (१)

हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥

सर्वव्यापक जागरूकता के गुणों को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, चाहे हम कितनी भी कोशिश कर लें। यह शब्दों से दूर के उस एहसास को दिखाता है जो वास्तविक जीवन के अनुभव, आंतरिक प्रकाश और एकता के सार से प्रकट होता है।

जैसे गूंगे की मिठिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

यह उस मिठाई के स्वाद जैसा है जिसे चखने वाला, बोलकर बता नहीं सकता। यह आंतरिक एहसास का प्रतीक है जिसे सिर्फ़ जिया जा सकता है, समझाया नहीं जा सकता। (१)(विराम)

रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥

जीभ को बोलने में आनंद आता है, कानों को सुनने में सुकून मिलता है और अंतरात्मा को आत्म-चिंतन से शांति मिलती है। इससे पता चलता है कि आंतरिक जागरूकता होने पर हमारी सभी इंद्रियां और क्षमताएं एक लय जैसे सामंजस्य में आ जाती हैं।

कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखां तह सोई ॥ २ ॥ २ ॥

भीखन कहते हैं कि उनकी आँखों को जहाँ भी वह देखते हैं, वहाँ संतोष मिलता है। उन्हें हर जगह वही सर्वव्यापक सत्ता महसूस होती है। यह ऐसी अवस्था को दर्शाता है जिसमें भेद-भाव का द्वैत मिट जाता है और एक ही सार्वभौमिक तत्व का अनुभव होता है। (२)(२)

तत्त्व: भक्त भीखन मन की ऐसी रूपांतरित अवस्था का वर्णन करते हैं जिसमें हर पल एक अनोखा सार सामने आता है। इस आनंदमयी अवस्था में, द्वैत का भेद मिट जाता है और हम अपने आस-

पास मौजूद सर्वव्यापी ऊर्जा को महसूस कर पाते हैं। हमारे भाव एकता की सुंदरता का जश्न मनाते हैं, हमारे रिश्ते एकजुटता में फलते-फूलते हैं और हमारी चेतना सबको अपना मानने की भावना पर विचार करके शांति पाती है। इससे स्पष्ट होता है कि अपनी आंतरिक जागरूकता को विकसित करके हम अपनी सभी क्षमताओं में सामंजस्य बिठा सकते हैं और जीवन के अनुभव को अद्भुत ढंग से समृद्ध कर सकते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com